

जुलाई 2019

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

वर्ष

32

द्वादश अंक

5 सुन्दर जीवन रचना सीखें

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान

12 आर्थिक परिदृश्य

16 राष्ट्रीय परिदृश्य

19 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

23 मुम्बई इंडियंस रिकॉर्ड चौथी बार आईपीएल की विजेता

27 क्रीड़ा जगत्

29 भारत की विविध पारम्परिक नाट्य शैलियाँ

31 विज्ञान समाचार

33 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

34 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

37 सारभूत तत्व कोष

लेख

40 विकास लेख—पारिस्थितिकीय विकास हेतु समन्वित आयोजना की प्राथमिकताएँ

42 राजनीतिक लेख—‘वाटर स्ट्राइक’ से टूटेगी पाकिस्तान की कमर

44 पत्रकारिता लेख—विश्व प्रेस स्वतन्त्रता सूचकांक में भारत 140वें स्थान पर : पत्रकारों के खिलाफ बढ़ती हिंसा

45 करियर लेख—एसबीआई में कनिष्ठ सहयोगियों (ग्राहक सहायता एवं विक्रय) की भर्ती—2019

हल प्रश्न-पत्र

49 उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018 (द्वितीय प्रश्न-पत्र)

60 बिहार बी.एड. संयुक्त प्रवेश परीक्षा, 2019

67 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) भर्ती परीक्षा, 2018 (चरण-1)

74 आर.आर.बी. ग्रुप ‘डी’ भर्ती परीक्षा, 2018

82 एस.एस.सी. मल्टी टास्किंग (गैर-तकनीकी) स्टाफ परीक्षा, 2017

आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित लिपिकीय संवर्ग (प्रा.) परीक्षा, 2018

88 तर्कशक्ति

91 संख्यात्मक अभिरुचि

95 English Language

98 आगामी उत्तराखण्ड समूह ‘ग’ भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

103 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड एन.टी.पी.सी., स्नातक कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

110 मैकेनिकल इंजीनियरिंग वस्तुनिष्ठ प्रश्न-डिप्लोमा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी

विविध/सामान्य

116 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18—भारतीय वस्त्र उद्योग क्षेत्र में अनुसन्धान एवं विकास के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में

118 भारतीय रेलवे वार्षिक रिपोर्ट 2017-18—रेलवे की स्नातक (10+2 व ग्रुप ‘डी’) परीक्षाओं के लिए विशेष

120 ज्ञान वृद्धि कीजिए

122 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

● E-mail : publisher@pdgroup.in ● Website : www.pdgroup.in



सुन्दर जीवन रचना सीखें

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

Four steps of achievement : Plan purposefully, Prepare prayerfully, Proceed positively. Pursue persistently.

— William A. Ward

मनुष्य निमित्र जहाँ भी होता है उस वातावरण में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहता है। वह चाहता है कि लोगों के मध्य उसका एक विशिष्ट स्थान हो और उस विशिष्ट स्थान को पाने के लिए वह कुछ विशिष्ट कर गुजरने की भावना भी अपने मन में संजोए रखता है। वह कुछ-न-कुछ किसी-न-किसी तरीके से अपने आपको प्रमाणित करने की कोशिश करता है। लोगों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करता है। कुछ लोग अच्छी वाणी बोल कर, कुछ लोग एक कलात्मक तरीके से पुरुषार्थ पहन कर, सुरुचि तरीके से सज-संवर कर, कुछ लोग अपनी कलाओं के द्वारा (चित्रकला, नृत्य कला अथवा वादन कला अथवा गायन कला किसी-न-किसी कलाओं के माध्यम से) लोगों का ध्यान आकर्षित कर पाते हैं। कुछ लोग हमेशा इस दुविधा में रहते हैं कि मेरे पास तो कोई कला है ही नहीं तो मैं इस मानव समाज के अन्दर अपनी क्या पहचान बनाऊँ। मेरी क्या विशिष्टता है। मैं तो एक बड़ा ही साधारण आदमी हूँ। बस अपने साधारण तरीके से ही अपने काम को पूरा कर सकता हूँ, लेकिन कुछ विशेष नहीं कर सकता, तो क्या लोग मुझे अपना ज्ञान नहीं देंगे, अपना प्यार नहीं देंगे, सम्मान नहीं देंगे और क्या मैं इस दुनिया में व्यर्थ ही हूँ।

अब देखो जहाँ एक व्यक्ति विशिष्टता हासिल करना चाहता है, वहीं दूसरे व्यक्ति के अन्दर में एक अन्तर्द्वन्द्व जन्म लेता है और तब अन्तर्द्वन्द्व में हीनता की भावना का शिकार हो करके कितने ही लोग अपने ही जीवन से घृणा करने लगते हैं। अपने इस जीवन का अनादर करने लगते हैं और तप्त संयोगी से सदा ही खफा बने रहते हैं। हरएक चीज इनकी नाराजगी बढ़ाती है, प्रसन्नता नहीं बढ़ा पाती और ऐसे लोग अपने आपको हमेशा ही दीन-हीन इस विकृत्य में लग जाते हैं और फिर अपनी जिन्दगी से नफरत करते-करते या तो बीमार हो जाते हैं या जिन्दगी भर को मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं अथवा अपनी इस नाराजगी को आक्रोश में व्यक्त करके पुनराधारण को प्रदर्शित करते हैं। लोगों को

ठेस पहुँचाते हैं। ऐसे लोग आसपास के लोगों पर अपना आक्रोश गाहे-बगाहे व्यक्त करता रहता है और यह भी कहता रहता है कि तुम सबको तो मेरी कोई परवाह ही नहीं है। मेरा यहाँ होना या न होना किसी काम का नहीं है। भगवान मुझे जल्दी से उठा ले इस दुनिया से। ऐसी बात करके वह खुद को और दूसरों को परेशान करते हैं और वह सभी लोग जब उनकी वजह से परेशान होते हैं और उनको महसूस कराते हैं कि तुम ऐसे शब्द न बोलो हमें दुःख होता है, तो ऐसे व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में कहीं-न-कहीं संतोष होता है और वह कहता है चलो ठीक है कम-से-कम कुछ तो लोग मुझसे प्रभावित हो रहे हैं और वह औरों को प्रभावित करने का एक गलत रास्ता ऐसी मानसिकता बना लेते हैं और फिर गलत रास्ते की वजह से वे विध्वंशक हो जाते हैं और आत्मिक हिंसा करते-करते अपने भीतर नरक को निर्मिति कर लेते हैं। कहीं दुःखों का एक घर बना लेते हैं। दुःखों के गर्त से बाहर निकलना आसान नहीं होता।

